International Journal of Advanced Educational Research
ISSN: 2455-6157
Impact Factor: RJIF 5.12
www.educationjournal.org
Volume 3; Issue 1; Jan 2018; Page No. 478-480

''कविता क्या है'': समकालीन कविता का परिप्रेक्ष्य–विजय रंजन

डॉ0 नीतू शर्मा
एसोसिएट प्रोफेसर, आई0टी0 पी0 जी0 कॉलेज, लखनऊ, उत्तर प्रदेश, भारत।

सारांश
काव्य मानव मन के भीतर स्नेह, माधुर्य और बौद्धिकता का विकास करके उसे सौन्दर्य–दृष्टि देता है। काव्य अपनी परिसीमा में जितना व्यापक है उतना ही सूक्ष्म है। काव्य का अस्तित्व जीवन से जुड़ा है और इसीलिए यह जीवन की भंगिमाओं की तरह विशालएवं बहुआयामी है। भारतीय साहित्य में कोई 'वाक्यं रसात्मकं काव्यं कहता है तो कोई 'उक्ति का वैचिन्य' मानता है। कोई 'रमणीयार्थ प्रतिपाद शब्द' कहता है तो कोई 'कल्पना प्रसूत बताता है। काव्य वस्तुतः हृदय से सबसे अधिक सम्बन्धित है। अर्थात अपने मूल रूप में अनुभूति की ही वस्तु है। जिसने हृदय पक्ष का स्पर्श प्राप्त कर लिया वही सच्चा कवि बन गया।

मूल शब्द : काव्य, कविता, कवि

प्रस्तावना
'कविता क्या है' विजय रंजन की बहुचर्चित आलोचनात्मक कृति है जो कविता को ताजगी और मार्मिकता से आधुनिक पटल पर रखती है। यह कृति दस अध्यायों में विभक्त है। कृति में कविता का विवेचन कई कोणों से किया गया है। उनकी दृष्टि से कोई पक्ष ओझल नहीं हुआ है। इस व्याख्या में वह शास्त्रीय, मिथकीय, दैवीय,ऐतिहासिक, तात्विकएवं पारिभाषिक लक्षणों के द्वारा कविता के कई अवयवों को हमारे सामने प्रस्तुत करते हैं। इस विश्लेषण में वह भारतीय काव्य–अवधारणाओं को ही नही अभिव्यक्त करते बल्कि पश्चिमी विद्वानों और काव्य–गुरूओं के कविता–विषयक सिद्धान्तों और विचारों से भी हमें परिचित कराते हैं। आलोच्य कृति 'कविता क्या है' के 'पूर्वार्चिक और 'उत्तरार्चिक' प्रखण्डों में दस अध्यायों में यथा 'कविताः आज के दर्पण में, कविताः मिथकीय आधार पर', कविताः स्वभाव के आधार पर, कविताः दैवीय या देवत्वशील, कविता : तात्विक आधार पर, कविता : पारिभाषिक आधार पर, कविताः काव्यज्ञ–लोकमत के आधार पर और उपसंहार में सम्प्रस्तुत की गयी है।

कवि या कलाकार अपने समय का अत्यंत संवेदनशील मानव होता है। उसे देश–काल की सीमा अपने पाश में बाँधने में असमर्थ सिद्ध होती है। 'कविताः आज के दर्पण में' शीर्षक में विजय रंजन का स्पष्ट मत है कि ''कविता समाजशील भी होती है और व्यक्ति को समाजोन्मुखी भी करती है। तथैव अनुनात्मक भौतिक चाकचिक्य के युग में भी कविता से मानव का जुड़ाव अद्यतन पूरी तरह टूट नहीं पाया है। कभी टूट पायेगा भी नहीं।'' तत्कालीन विरोधी परिस्थितियों के समक्ष भी वह अपना हिमालयी व्यक्तित्व लेकर अडिग खड़ा रहता है। जैसे घोर निराशा का अन्धकार सूर्य के आगमन से पूर्व ही कूच कर जाता है। कवि की कला, सृष्टि की पुकार पर अतीत का विसर्जन कर देती है, युग को धर्म देती है, समय को सन्मार्ग पर चलने की प्रेरणा देती है। लेखक ने प्रस्तुत अध्याय में वैदिक मनीषी के काव्य रूप, गुण, अलंकार, रस छन्द, वकोक्ति वैदग्ध्य आदि की चर्चा करते हुए डा0 रामचन्द्र शुक्ल, डॉ0 नामवर सिंह, भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, बाबू गुलाबराय, अज्ञेय आदि काव्य मनीषी द्वारा अद्यतन कविता के विविध पक्षों को उजागर किया है। समग्र रूप में लेखक ने प्रस्तुत अध्याय में इस तथ्य की पुष्टि की है कि कविता की संरचना महज शब्दों का संयोजन नहीं होता, बल्कि यह शब्दों के सामर्थ्य को गहरे तक उकेरती और उजागर करती है। यह कवि के अन्तर्मन की वैचारिक अनुगूँज होती है। जिससे वह दूसरों को झंकृत करना चाहती है। लेखक का मत है कि ''जीवन में प्रतिकूलताएं कितनी भी सघन हों, कविता के दुःकाल पर मर्सिया गाने भर से काम नहीं चलेगा। हमें देखना होगा कि क्या विगत समय में कविता ने किसी न किसी रूप–स्वरूप में हमें कभी कोई शक्ति दी है। मानव जीवन की जटिलताओं, बोझिल स्थितियों के बोझ को हल्का करने हेतु? इन प्रश्नों का उत्तर यदि किंचित भी कविता के पक्ष में हो तो सोचना होगा कि क्यों उत्पन्न हो गई कविता–दुर्गति की वर्तमान स्थिति? ''इस रूप में समीक्ष्य कृति में लेखक की संघर्षशील चेतना और काव्य के उत्तरोत्तर विकास को समझने का अवसर मिलता है। जिसमें काव्य के यथार्थ की अभिव्यक्ति में लेखक की सहजता और तरल संवेदना गहरे तक घुली है।

कविता : मिथकीय आधार पर'' शीर्षक में लेखक ने कविता के जन्मना संस्कार के संबंध में विभिन्न मत प्रस्तुत किये हैं। ज्ञान रंजन का मत है कि ''कविता का अनुशीलन प्रथमतः तर्कणा के विपरीत मिथकीय आधारों पर अपरिहार्य है इसलिए भी कि कविता का जन्म उस प्रागैतिहासिक युग में हुआ जब हीमोहैबिलिस (अर्द्धविकसित मानव) से होमोसैपियन्स (प्रबुद्ध मानव) बना था मानव और जब मानव चेतना बौद्धिक विकास की डगर पर अग्रसर हो रही थी। उस काल खण्ड का क्रमवारऐतिहासिक विवरण न उपलब्ध है और न ही पूरी तरह उपलब्ध हो सकता है; अतएव कविता के जन्मकाल के तत्कालीन कारक–कारण, अवस्थिति–परिस्थिति के तार्किक–विवरण लक्ष्य कर पाना सम्भव नही।'' कविता संबंधी कुछ मिथक हैं जो कविता के उत्स और उसके जन्म, विकास आदि को सार्थक रूप में रूपायित करने में सक्षम है। वस्तुतः भावनाओं के क्षोभ की अभिव्यक्ति ही कविता है। ''शोकार्त्तस्य प्रवृत्तियों में श्लोको भवित नान्यथा।'' तमसा के पावन पुलिन पर आदि कवि क्रौंच की वियोगजन्य पीड़ा को न संभाल सका और उसके मुख से जो वाणी फूटी, वही समष्टि में कविता के नाम से अभिहित हुई। अस्तु, काव्य का स्रोत वेदना है, पीड़ा है, आह है, कराह है, और है वे मधुर भावनाओं में डूबी अतीत की स्मृति, जो कवि के हृदय में

समय की पुकार पर उत्पन्न होकर समाज के चिरन्तन प्रश्नों का समाधान करती है। कविता के उद्भव और उसके मौलिक सद्गुणों पर सहज रूप से व्याख्यायित करते हुए विजय रंजन आचार्य भरत के नाट्यशास्त्र में 'कवि रहस्य' पर को इंगित करते हैं जिसमें कविता उत्पत्ति को शिव से तदन्तर ब्रह्म से संबंधित बताया गया है। संस्कृत आचार्यों के अतिरिक्त पाश्चात्य समीक्षक यथाए0वी0कीय भी आचार्य भरत के इस मिथकीय आविर्भाव से सहमत दिखते हैं। कविता को मूलतः शिवएवं ब्रह्म से सहयुजित दर्शानें वाले मिथक भी प्रस्तुत अध्याय में विस्तार से वर्णित हुए है।

कविता को 'देवी सरस्वती से सहयुजन के आधार पर विश्लेषित करते हुए लेखक ने लिखा है–कि ''देवी सरस्वती' जिससे शक्ति। प्रेरणा प्राप्त करके कविता विरचित होना बताया जाता है वे सुर–साधिका हैं और सुर की अधिष्ठात्री भी। अतएव देवी सरस्वती से सहयुजित कविता को भी 'सुर' (लय) से विमुख नहीं होना चाहिए। 'रामायणम्' में 'सत् की अधिष्ठात्री देवी सरस्वती की प्रेरणा से आदि श्लोक के आविर्भाव–प्रकथन का तथा आदि श्लोक में अधर्म के रामनार्थ वधिक को श्राप दिये जाने का प्रकथन भी है। भारतीयेतर अभिमत में भी कविता को देवी म्यूज, देवी इंन्हे दुआना, देवी बेंजाइतेन आदि की प्रेरणा से आविर्भूत माने जाने का मिथक है। इस रूप में प्रस्तुत अध्याय देवी सरस्वती पर आधारित कविता संबंधी मिथकों का तार्किक और वैज्ञानिक विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

'कविता केऐतिहासिक आधार के अंतर्गत विजय रंजन कविता के विस्तृत परिचय के रूप में व्यक्ति और समाज का संबंधएवं उसके फलित की आलोचना करते हैं। उनका स्पष्ट मत है कि वर्तमान साहित्यिक परिदृश्य में वैचारिक विविधताएवं नवोन्मेषी भाषिक संरचना के साथ शैलीगत विशिष्टता आश्वतिकारक है। आलोच्य परिप्रेक्ष्य में कविता के इतिहास को प्राचीनतम ग्रन्थ 'संस्कृत साहित्य के ऋग्वेद से लेकर संस्कृत आचार्य भरत, भामह, दण्डी, अभिनव गुप्त, भर्तहरि से लेकर पश्चिम साहित्य में कविता केऐतिहासिक आधार को विस्तृत रूप में व्याख्यायित किया है। लेखक ने कविता और काव्यशास्त्र के ज्ञात इतिहास से कविता, कवि, काव्यशास्त्र आदि के परम्परागत अर्थों से कविता–विन्यास आदि से कविता को सार्थक रूप से निरूपित किया है। इस रूप में कविता और काव्यशास्त्र के प्राचीनतम ज्ञान को उत्कृष्ट रूप से व्याख्यायित किया है।

'कविता : स्वभाव के आधार पर' विश्लेषित करते हुए विजय रंजन कविता के सार्वभौमिक अवयवों की विस्तार से चर्चा करते हैं। काव्य मानव मन के भीतर स्नेह, माधुर्य और बौद्धिकता का विकास करके उसे सौन्दर्य दृष्टि देता है। काव्य अपनी परिसीमा में जितना व्यापक है उतना ही सूक्ष्म है। काव्य का अस्तित्व जीवन से जुड़ा है और इसीलिए यह जीवन की भंगिमाओं की तरह विशालएवं बहुआयामी है। काव्य कोएक निश्चित परिभाषा में नहीं बाँधा जा सकता। समय परिवर्तनशील है और हर युग का कवि या साहित्यकार अपने युग के आलोक में काव्य की परिभाषा निश्चित करता है। भारतीय साहित्य में कोई 'वाक्यं रसात्मकं काव्यम्; कहता है तो कोई इसे 'उक्ति का वैचित्र्य' मानता है। कोई 'रमणीय प्रतिपाद शब्द' कहता है तो कोई 'कल्पना प्रसूत' बताता है। आचार्य रामचन्द्र शुल्क ने कविता को 'जनता की चित्तवृत्तियों का संचित प्रतिबिम्ब बताते हुए 'विरूद्धों का सामन्जस्य' कहा है। साथ ही प्रस्तुत अध्याय कई काव्य मनीषी, चिन्तक और विचारकों यथा तुलसीदास, कबीर, निराला, मैथिलीशरण गुप्त, बालमुकुन्द गुप्त, से लेकर सुकरात, प्लेटो, मैक्डूगल आदि के विचारों का विश्लेषण करता है जिनसे संस्कृत और हिन्दी में कविता के स्वभावगत स्वरूप को विस्तार मिला है।

विजय रंजन ने संस्कृत सिद्धान्तों की परम्परा का अवगाहन करते हुए आधुनिक पद्धतियों के परिप्रेक्ष्य में काव्य सिद्धान्तों को प्रतिपादित किया है। 'कविता : दैवीय या देवत्वशील; कविता : तात्विक आधार पर ; कविताः पारिभाषिक आधार पर; 'कविताः काव्यज्ञ–लोकमत के आधार पर, अध्यायों में लेखक के काव्य–सिद्धान्त जीवन के विविध भावों, विचारों और कल्पनाओं का पुंच हैं। जीवन के प्रति आस्था तथा तज्जन्य सम्पृक्त संस्कृति उनके काव्य का मूल है। उनकी दृष्टि में जीवन की व्यापक परिधि में साहित्य में समन्वय अपेक्षित है। सत्य–सौन्दर्य, शिव–सौन्दर्य, बुद्धि–हृदय, काव्य–दर्शन, आदर्श–यथार्थ, शाश्वत–सामायिक आदि कविता के विकासात्मक कल्याण हेतु अपेक्षित है।

लेखक का स्पष्ट मत है कि साहित्य/कविता का शास्त्र उसका प्रमुख अंग होता है। ठीक उसी प्रकार भाषा का प्रमुख अंग उसका व्याकरण होता है। जिस भाषा का व्याकरण पक्ष जितना ही प्रौढ़ होगा वह भाषा उतनी ही परिष्कृत और महान् मानी जाएगी, उसी प्रकार जिस कविता का शास्त्रीय पक्ष जितना विकसितएवं पूर्ण होता है वह कविता भी उतनी ही महान् होगी। हिन्दी काव्यशास्त्र का भवन संस्कृत काव्यशास्त्र की नींव पर आधारित है। रीतिकालीन कविता का महत्व इसलिए नहीं है कि उसमें नायक–नायिकाओं के सुन्दर चित्रण हैं अथवा कविता रसिकों का मनः प्रसादन करती है बल्कि इसलिए है कि रीतिकालीन कवियों ने संस्कृत की काव्यशास्त्रीय मान्यताओं को पहली बार हिन्दी में प्रस्तुत किया। येएक प्रकार से संस्कृत काव्यशास्त्र का हिन्दी में पुनरूद्धार था।

हिन्दी साहित्य में काव्यशास्त्र के अनेक ग्रन्थ रचे जा चुके हैं। 'कविता क्या है' भी इसी परम्परा कीएक कड़ी है। इस पुस्तक में विजय रंजन का दृष्टिकोण संस्कृत, हिन्दी और पाश्चात्य साहित्य के प्रमुख कवियों, आलोचकों, लेखकों और विचारकों के काव्य–सिद्धान्त का सन्तुलितएवं वैज्ञानिक विवेचन रहा है। काव्य संबंधी विभिन्न विचार सारणियाँ और आंदोलन लेखक को प्रभावित करते रहते हैं और इनके आधार पर साहित्य के मान और समीकरण बदलते रहते हैं। सम्पूर्ण काव्य शास्त्रीय चिन्तन इन्हीं विचार, सारणियों और आन्दोलनों काएक क्रमिक विकास है। कवियों के शास्त्रीय पक्ष पर विचार करते समय राष्ट्र के जन–जीवन में उदित होने वाली विचारधाराओं और आंदोलनों का विस्तृत विवेचनएवं इस विवेचन के शास्त्रीय पक्ष का विवेचन भी अपेक्षित होता है क्योंकि बिना उसको समझे साहित्य के नये–नये रूपों और उसके विकासमान प्रतिमानों को समझना असम्भव है।

कोई भी चिन्तनएकाएक उदित नहीं होता। सामाजिक सामयिक व्यवस्था के बीज उसके उदय होने के मूल में छिपे रहते हैं। सामाजिक विषमताएं नये विचारों को जन्म देती हैं। पुराने विचारों का संशोधन करती हैं और यही संशोधितएवं परिवर्द्धित विचार साहित्यशास्त्र में अभिव्यक्त होने लगते हैं। इन्हें समझने के लिए साहित्यशास्त्रीय अध्ययन आवश्यक हो जाता है। यही विचार धारा इस पुस्तुक के मूल में कार्यरत है।

निष्कर्ष

विजय रंजन इस तथ्य की पुष्टि करते हुए कहते हैं कि कविता–साहित्य मात्र मनोरंजन सौन्दर्यबोध या कि वैयक्तिक भावों की अभिव्यक्ति या स्वगत और समष्टिगत नकारात्मकताओं की अभिव्यक्ति या सतही संवेदना का प्रतिफलन नही है, प्रत्युत वस्तुनिष्ठ काव्य के गद्य–पद्य में उसके अन्मय, मनोमय, विज्ञानमय, कोशों में मौलिक सद्गुण तथा ऊर्ध्ववाहिता, लोकोन्मुखता, परोन्मुखता, लोकमंगल–द–कारशीलता, नयाशीलता, ऋृतशीलता,

सत्वशीलता, शिवशीलता, सार्वसुन्दरम्, ज्ञानशीलता इत्यादि समाहित होते हैं। ''कविता क्या है'' के सम्बन्ध में पुस्तक के प्राकथन में स्वप्निल श्रीवास्तव कहते हैं कि यह पुस्तक विजय रंजन की पूर्व पुस्तकों का विस्तार है। इसे पढ़ते हुए लगता है कि वे शास्त्रीय तत्वों को आज की कविता के लिए अनिवार्य मानते हैं। इस तथ्य की पुष्टि के लिए वे मिथकों और प्राचीन काव्यों से उदाहरण देते हैं। संभव है बहुत से लोग उनकी इस अवधारणा से असहमत हो लेकिन साहित्य का विमर्श सहमतियों और असहमतियों के बीच से निकलता है। कविता के मूल्यांकन के लिए सहिष्णुता को नजर अन्दाज नहीं किया जा सकता है। उनकी इस कृति से गुजरते हुए प्रारम्भ मेंएक बार ये लग सकता है कि वह पुराने समय में ठहरे हुए हैं और अपनी बात को प्रमाणित करने के लिए साहित्य और शास्त्र का आलम्बन लेते हैं, लेकिनऐसा नहीं है। बस पुस्तक के पूर्ण अवलोकन के बाद यह आरोप अपने आप निरस्त हो जाता है।

संक्षेप में ''कविता क्या है''? पुस्तक का केवल शैक्षिक महत्व ही नहीं है बल्कि यह उन सुधी पाठकों के लिए भी परम उपयोगी है जो कविता के उद्‌गम स्थलों को जानना चाहते हैं।

सन्दर्भ सूची

1. हिन्दी का वैश्विक परिदृश्य–सं0 प्रो0 कैलाश देवी सिंह
2. हिन्दी भाषा और साहित्य को आर्यसमाज की देन–कृपा शंकर उपाध्याय–वाणी प्रकाशन–नई दिल्ली
3. समकालीन कविता का परिप्रेक्ष्य–डॉ0 रेवती रमण–नवनीत प्रकाशन इलाहाबाद
4. आधुनिक हिन्दी कवियों के काव्य सिद्धान्त–सं0 डॉ0 सुधाकर–विकास प्रकाशन
5. आधुनिक काव्यः चिन्तन और संवेदना–डॉ0 करूणा शंकर उपाध्याय–राजकमल प्रकाशन
6. कवि परम्परा–तुलसी से त्रिलोचन–प्रभाकर क्षेत्रिय–भारतीय ज्ञानपीठ